



“वानिकी में जैव-उर्वरकों एवं जैव-कीटनाशकों के उपयोग” पर तीन दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का 23 से 25 सितंबर, 2026 का आयोजन

भा.वा.अ.शि.प.-हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान, शिमला, हिमाचल प्रदेश द्वारा “वानिकी में जैव-उर्वरकों एवं जैव-कीटनाशकों का उपयोग” विषय पर अन्य हितधारकों हेतु तीन दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन 23 से 25 सितंबर, 2026 तक किया गया। यह प्रशिक्षण कार्यक्रम पर्यावरण, वन एवं जलवायु परिवर्तन मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली के वित्त पोषण से आयोजित किया गया। इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में आयुर्वेदिक विभाग, विश्वविद्यालय, कॉलेज, ईको टास्क फोर्स, पंचायत जनप्रतिनिधि, सहकारी समिति सहित कुल 30 प्रतिभागियों ने भाग लिया। इस प्रशिक्षण कार्यक्रम का उद्घाटन मुख्य अतिथि डॉ. महावीर सिंह, कुलपति, हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय द्वारा किया गया।

प्रशिक्षण कार्यक्रम का आरंभ 23 सितंबर 2026 को प्रशिक्षण समन्वयक, डॉ. पवन कुमार, वैज्ञानिक-एफ एवं प्रभाग प्रमुख, विस्तार प्रभाग, हि.व.अ.सं., शिमला, के स्वागत संबोधन द्वारा किया गया। प्रशिक्षण समन्वयक ने प्रशिक्षण कार्यक्रम के उद्देश्य, वानिकी क्षेत्र में जैव-उर्वरकों एवं जैव-कीटनाशकों के उपयोग, जैविक कीट प्रबंधन तथा संबंधित वैज्ञानिक एवं व्यावहारिक तकनीकों के बारे में अन्य हितधारकों को अवगत कराया और अगले तीन दिनों तक के कार्यक्रम की विस्तृत जानकारी सबके साथ सांझा की। तदुपरान्त डॉ. मनीषा थपलियाल, निदेशक, हि.व.अ.सं., शिमला द्वारा प्रशिक्षण कार्यक्रम पर विशेष संबोधन दिया गया। उन्होंने अपने संबोधन में नर्सरियों में जैव उर्वरकों और जैव कीटनाशकों के उपयोग के बारे में तथा उनके प्रयोग से पौधों की वृद्धि पर पड़ने वाले प्रभावों पर विस्तृत चर्चा की। उन्होंने प्रतिभागियों से सक्रिय रूप से भाग लेने और प्रशिक्षण सत्र को अधिक संवादात्मक एवं सहभागी बनाने का अनुरोध किया। इसके उपरान्त मुख्य अतिथि डॉ. महावीर सिंह, कुलपति, हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय द्वारा उद्घाटन संबोधन दिया गया। उन्होंने अपने सम्बोधन में जैविक उर्वरकों के अधिक उपयोग पर जोर दिया और बताया कि जैव उर्वरकों के प्रयोग से मृदा की उर्वरकता शक्ति में सुधार होता है तथा फसलों की पैदावार एवं गुणवत्ता में वृद्धि होती है। उन्होंने जैव-कीटनाशकों तथा जैव-उर्वरकों के पारिस्थितिकी तंत्र पर पड़ने वाले प्रभावों के बारे में विस्तार से बताया। उन्होंने यह भी समझाया कि इनके अनुचित या अत्यधिक उपयोग से पारिस्थितिकी तंत्र में असंतुलन उत्पन्न हो सकता है।

तकनीकी सत्र में जैव-कीटनाशक उत्पादों के निर्माण में हिमालयी जैव-संसाधनों का उपयोग एवं उनकी भूमिका, तथा सतत विकास और मानव कल्याण के लिए जैव-कीटनाशक एवं जैव-उर्वरक जैसे विषयों पर विशेषज्ञों द्वारा व्याख्यान दिए गए। हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय के जैव-विज्ञान विभाग के अध्यक्ष डॉ. हरिंदर सिंह बन्वाल ने कीट प्रबंधन में हिमालयी जैव-संसाधनों के प्रभावी अनुप्रयोग की जानकारी दी। हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय की एसोसिएट प्रोफेसर डॉ. मीना चौधरी ने एफिड कीटों के नियंत्रण में प्राकृतिक शत्रुओं की भूमिका पर व्याख्यान दिया। प्रोफेसर डॉ. जगबीर सिंह (सेवानिवृत्त) पंजाबी विश्वविद्यालय, पटियाला ने सतत विकास और मानव कल्याण के लिए जैव-कीटनाशकों और जैव-उर्वरकों

के इस्तेमाल को जरूरी बताया। हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय के डॉ. महेन्द्र ठाकुर ने किसानों के सामाजिक-आर्थिक स्तर को ऊंचा उठाने के लिए वर्मी तकनीक (केंचुआ खाद) के बारे में विस्तार से समझाया। श्री पीताम्बर सिंह नेगी, वैज्ञानिक-ई ने हिमालयन पेंसिल सिडार (*Juniper polycarpus*) की उन्नत नर्सरी तकनीक से सभी को अवगत कराया। सम्मेलन का समापन चर्चा एवं निष्कर्ष सत्र के साथ हुआ जिसके उपरांत श्रीमती शिल्पा, मुख्य तकनीकी अधिकारी, हि.व.अ.सं., शिमला ने धन्यवाद ज्ञापित किया।

तकनीकी सत्र के उपरांत, श्रीमती शिल्पा, मुख्य तकनीकी अधिकारी, श्री अखिल कुमार, मुख्य तकनीकी अधिकारी तथा श्री राजेंद्र पाल भाटिया, तकनीकी सहायक द्वारा प्रशिक्षणार्थियों के लिए संस्थान के प्रौद्योगिकी प्रदर्शन केंद्र का भ्रमण आयोजित किया गया। इस दौरान प्रशिक्षणार्थियों को संस्थान द्वारा संचालित विभिन्न अनुसंधान गतिविधियों तथा वानिकी क्षेत्र में उनके व्यावहारिक उपयोग हेतु विकसित प्रौद्योगिकियों के बारे में जानकारी प्रदान की गई।

प्रशिक्षण कार्यक्रम के दूसरे दिन, 24 सितंबर 2026 को क्षेत्र अनुसंधान केंद्र (एफआरएस), शिलारू, शिमला तथा इससे संबद्ध प्रायोगिक स्थलों का क्षेत्र भ्रमण आयोजित किया गया। भ्रमण के दौरान डॉ. पवन कुमार, वैज्ञानिक-एफ एवं प्रशिक्षण समन्वयक तथा श्रीमती शिल्पा, मुख्य तकनीकी अधिकारी द्वारा वन पौधशालाओं एवं वृक्षारोपण क्षेत्रों में जैव-कीटनाशकों के प्रयोग का प्रदर्शन किया गया। श्री अखिल कुमार, मुख्य तकनीकी अधिकारी द्वारा वन पौधशालाओं एवं वृक्षारोपण क्षेत्रों में माइक्रोराइजल इनोकुलेंट्स एवं जैव-उर्वरकों के क्षेत्रीय प्रयोग का प्रदर्शन किया गया। प्रशिक्षणार्थियों ने विशेषज्ञों के साथ संवाद किया तथा वानिकी कार्यों में इन प्रौद्योगिकियों के प्रयोग एवं उपयोगिता के संबंध में व्यावहारिक जानकारी प्राप्त की।

प्रशिक्षण कार्यक्रम के तीसरे दिन, 25 सितंबर 2026 को डॉ. पवन कुमार, वैज्ञानिक-एफ एवं प्रशिक्षण समन्वयक द्वारा “वानिकी कीटों का पर्यावरण-अनुकूल प्रबंधन” विषय पर व्याख्यान दिया गया। इसके पश्चात डॉ. अश्वनी तपवाल, वैज्ञानिक-एफ, समूह समन्वयक एवं कार्यालयाध्यक्ष, भा.वा.अ.शि.प.-हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान द्वारा “वानिकी में जैव-उर्वरकों का अनुप्रयोग” विषय पर व्याख्यान दिया गया।

इसके उपरांत “पादप रोगजनकों का पर्यावरण-अनुकूल प्रबंधन” विषय पर डॉ. संतोष वाटपाडे, डॉ. गीतांजलि ठाकुर एवं डॉ. प्राची शर्मा, पादप रोग विज्ञान विभाग, डॉ. वाई.एस. परमार औद्यानिकी एवं वानिकी विश्वविद्यालय, नौणी, सोलन द्वारा व्याख्यान दिया गया। डॉ. हरीश कुमार शर्मा, सेवानिवृत्त प्रोफेसर, डॉ. वाई.एस. परमार औद्यानिकी एवं वानिकी विश्वविद्यालय, नौणी, सोलन द्वारा “जैविक खेती में कीट परागणकों की भूमिका” विषय पर व्याख्यान दिया गया। तकनीकी सत्रों के पश्चात एक सहभागी प्रतिक्रिया एवं चर्चा सत्र आयोजित किया गया, जिसमें प्रशिक्षणार्थियों ने अपने अनुभव साझा किए तथा विशेषज्ञों के साथ संवाद किया।

समापन सत्र की अध्यक्षता डॉ. मनीषा थपलियाल, निदेशक, भा.वा.अ.शि.प.-हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान द्वारा की गई। उन्होंने प्रशिक्षणार्थियों को प्रशिक्षण प्रमाण-पत्र वितरित किए तथा तीन दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम के सफल आयोजन के लिए डॉ. पवन कुमार, प्रशिक्षण समन्वयक एवं उनकी टीम के प्रयासों की सराहना की। उन्होंने प्रशिक्षण के दौरान अर्जित ज्ञान एवं प्रौद्योगिकियों को व्यावहारिक वानिकी गतिविधियों में लागू करने के महत्व पर भी बल दिया। कार्यक्रम का समापन डॉ. पवन कुमार, प्रशिक्षण समन्वयक, भा.वा.अ.शि.प.-हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान द्वारा प्रस्तुत औपचारिक धन्यवाद ज्ञापन के साथ हुआ।

Three-Days Training Programme on the “Use of Biofertilizers and Biopesticides in Forestry” organized from 23rd to 25th September 2026

Himalayan Forest Research Institute (HFRI), Shimla, under the Indian Council of Forestry Research and Education (ICFRE), organized a three-day training programme on the “**Use of Biofertilizers and Biopesticides in Forestry**” for various stakeholders from 23rd to 25th September 2026. The training programme was organized with the financial support of the **Ministry of Environment, Forest and Climate Change, Government of India, New Delhi**. A total of 30 participants, including representatives from the Department of Ayurveda, universities, colleges, Eco Task Force, Panchayati Raj institutions, and cooperative societies participated in the programme. The training programme was inaugurated by the Chief Guest, **Dr. Mahavir Singh, Vice-Chancellor, Himachal Pradesh University**.

The training programme commenced on 23rd September 2026 with the welcome address by the training coordinator, **Dr. Pawan Kumar, Scientist-F and Head, Extension Division, HFRI, Shimla**. The Training Coordinator briefed the participants about the objectives of the training programme, the use of biofertilizers and biopesticides in the forestry sector, biological pest management, and related scientific and practical techniques. He also shared detailed information about the programme scheduled for the next three days.

Thereafter, **Dr. Manisha Thapliyal, Director, HFRI, Shimla**, delivered a special address on the training programme. In her address, she discussed in detail the use of biofertilizers and biopesticides in nurseries and their effects on plant growth. She encouraged the participants to actively participate and make the training sessions more interactive and participatory. This was followed by the inaugural address by the Chief Guest, **Dr. Mahavir Singh, Vice-Chancellor, Himachal Pradesh University**. In his address, he emphasized the use of organic fertilizers and highlighted that the use of biofertilizers helps improve soil fertility and contributes to increased crop yield and quality. He also explained in detail the impact of biopesticides and biofertilizers on the ecosystem. He further emphasized that their improper or excessive use may lead to ecological imbalance.

During the technical sessions, experts delivered lectures on various topics, including the utilization of Himalayan bio-resources in the production of biopesticide products and their effective application in pest management; the role of natural enemies in the biological control of aphids; and the use of biopesticides and biofertilizers for sustainable development and human well-being. Dr. Harinder Singh Banyal, Head, Department of Biosciences, Himachal Pradesh University, provided insights into the effective application of Himalayan bio-resources in pest management. Dr. Meena Chaudhary, Associate Professor, Himachal Pradesh University, delivered a lecture on the role of natural enemies in the control of aphid pests. Prof. Dr. Jagbir Singh (Retd.), Punjabi University, Patiala, highlighted the importance of biopesticides and biofertilizers for sustainable development and human well-being. Dr. Mahendra Thakur, Himachal Pradesh University elaborated on vermi-technology (vermicomposting) as a means of improving the socio-economic status of farmers. Shri Pitambar Singh Negi, Scientist-E, familiarized the participants with advanced nursery techniques for Himalayan Pencil Cedar (*Juniper polycarpus*). At the end of the inaugural session, Smt. Shilpa, Chief Technical Officer formally proposed the vote of thanks.

After the technical session, Smt. Shilpa and Sh. Akhil Kumar, Chief Technical Officer and Sh. Rajender Pal Bhatia, Technical Assistant, organised a visit to the Technology Demonstration Centre of the institute for the participants. During the visit, the participants were apprised of

various research activities undertaken by the Institute and the technologies developed for their practical application in forestry.

On the second day of the training programme, 24 September 2026, a field visit to the Field Research Station (FRS), Shillaru, Shimla, and adjoining experimental sites was organised. During the visit, Dr. Pawan Kumar, Scientist and Training Coordinator ICFRE-HFRI, and Smt. Shilpa, Chief Technical Officer, demonstrated the application of bio-pesticides in forest nurseries and plantations. Sh. Akhil Kumar, Chief Technical Officer, demonstrated the field application of mycorrhizal inoculants and bio-fertilizers in forest nurseries and plantations. The participants also interacted with the experts and gained practical insights into the application and utility of these technologies in forestry practices.

On the third day of the training programme, 25 September 2026, a lecture on “Management of Insect Pests of Forestry through Eco-friendly Practices” was delivered by Dr. Pawan Kumar, Scientist-F and Training Coordinator, ICFRE-HFRI. This was followed by a lecture on “Application of Bio-fertilizers in Forestry”, delivered by Dr. Ashwani Tapwal, Scientist-F, Group Coordinator and Head of Office, ICFRE-HFRI. A lecture on “Eco-friendly Management of Phytopathogens” was delivered by Dr. Santosh Watpade, Dr. Geetanjali Thakur and Dr. Prachi Sharma, Department of Plant Pathology, Dr. Y.S. Parmar University of Horticulture and Forestry, Nauni, Solan. Dr. Harish Kumar Sharma, Retired Professor, Dr. Y.S. Parmar University of Horticulture and Forestry, Nauni, Solan, delivered a lecture on “Role of Insect Pollinators in Organic Farming”. The technical sessions were followed by an interactive feedback and discussion session, during which the participants shared their experiences and interacted with the experts.

The valedictory session was chaired by Dr. Manisha Thapliyal, Director, ICFRE-HFRI. She distributed certificates to the participants and appreciated the efforts of Dr. Pawan Kumar, Training Coordinator, and his team for the successful organisation of the three-day training programme. She also emphasised the importance of applying the knowledge and technologies gained during the training in practical forestry activities. The programme concluded with a formal vote of thanks proposed by Dr. Pawan Kumar, Training Coordinator, ICFRE-HFRI.









